INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:2(3), February:2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

विमुद्रीकरण का जनधन खातों पर प्रभाव

राम भजन साकेत[1] , डा0 विजय सिंह परिहार[2]

[1]शोध छात्र म0 गा0 चि0 ग्रा0 वि0 चित्रकूट–सतना (म0 प्र0)

[2]ग्रा0 वि0 प्र0 संकाय गा0 चि0 ग्रा0 वि0 चित्रकूट–सतना (म0 प्र0)

विमुद्रीकरण

स्वतंत्रता संग्राम के बाद विमुद्रीकरण ही ऐसा था जिसमें सम्पूर्ण भारत **देश** के निवासियों को प्रभावित किया यह एक एसी प्रकिया है। जिसके अन्तर्गत मुद्रा को कानूनी अधिकार प्राप्त होता है और यह अधिकार सिक्कों के साथ–साथ नोटों को भी प्राप्त होता है जिसके अन्तर्गत **देश** के निवासी अपनी अवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मुद्रा का **देश** के किसी भी राज्य अथवा क्षेत्रों में कर सकते है। लेकिन जब विमुद्रीकरण की बात आती है तब उसका कानूनी दायरा एक सीमित अवधि के दौरान चलन से बाहर हो जाता हैं और उस नोट या सिक्के से हम अपनी जरूरत की कोई भी वस्तु नही प्राप्त कर सकते या यूं कहे कि भारत सरकार के द्वारा **घोषणा** की जाती है, कि ये नोट अब चलन से बाहर कर दिये गये है। यह तब होता है जब सरकार को यह महसूस होता है, कि **देश** में **भ्रष्टाचार**, मँहगाई, आतंकवाद, काला धन को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। जिससे कि **देश** में 8 नवम्बर 2016 की रात 8 बजकर 17 मिनट पर प्रधान मंत्री **श्री** नरेन्द्र मोदी **जी** ने **घोषणा गई** , कि 500 और 1000 रूपये के नोट चलन से बाहर कर दिये गये हैं ! **अतः** जिनके पास भी हो , वो बैंकों में 50 दिवस के अन्दर अपने नोट बदलवा सकते है। जिससे **सुनते ही देश** में अफरा–तफरी का माहौल बन गया ! क्योकि इन 500 और 1000 नोट की एक अलग ही अहमियत थी **जो देश** में ये नोट ज्यादा चलन में थे ! भारतीय अर्थव्यवस्था में **दोनों** करेंसी का 86% भाग **काबिज** था ! परिणाम स्वरूप ये नोट मजदूर छोटे व्यापारीयों व्यापारियों, कर्मचारियों को अत्यधिक **कष्ट** का सामना करना पड़ा, एवं **देश** के लोग बैंक की लाइनों में खड़े होकर तीन महीने तक नोट बदलाते रहे ! इसके अलावा कोई प्रमुख कार्य नही किया **गया**।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:2(3), February:2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

विमुन्द्रीकरण का मजदूरों एवं किसानों पर प्रभाव :–

विमुद्रीकरण ही ऐसा कदम था जिससे पूरा भारत **देश** 'व्यापक' स्तर पर प्रभावित हुआ जिसके अर्न्तगत गरीब व्यक्ति, फल एवं सब्जी विक्रेता, मजदूर, किसान, **बुजुर्ग** व्यक्ति, महिलाए, छात्र, छात्राए हर एक व्यक्ति को विमुन्द्रीकरण के फैसले ने प्रभावित किया है। लोग सुबह होते ही बैंकों के पास नोट बदलने के लिए **लाइनों** खडे रहते थे ! चाहे उनको भूखे प्यासे ही लाइन में खड़ा रहना पडे ! यहां तक कि 3 माह के अन्दर 100 से अधिक व्यक्तियों की जाने चली गई, जिसका कारण सरकार की इस व्यवस्था को ही जाता है। 1000, और 500 नोट को बदलने के बाद आम जनता के सामने एक और चुनौती भरा जीवन देखने को तब मिला ! जब बैंको से 2000 दो हजार रूपये का नोट उनको बदले में दिया गया ! यह भी उनके सामने बड़ी समस्या थी ! **लोगों के** अपने पैसे **होने** के बावजूद भी, यदि कोई समान खरीदना चाहे तो वे नही खरीद पा रहे थे ! क्योकि 2000 रूपये का छुट्टा नही मिल पा रहा था ! **पैसों** के आभाव में कितने मरीजों की जाने चली गई, **और** यहां तक **की शादी**–विवाह भी आम लोग के **वश** की बात नही थी ! विमुन्द्रीकरण के समय किसान **अपनी** खरीफ की **फसलों को** बेचने **की** तैयारी में था ! लेकिन नोट बन्दी से उपज की कीमत 40% तक की कमी आई, जिससे किसानों की उपज का 25 से 50 **प्रतिशत हिस्सा भी बेंच नहीं** पाया **और यहाँ तक कि** रबी फसल की बुआई, तक प्रभावित हुई ! **जिसके** परिणाम स्वरूप किसानों पर कर्ज का भार अत्यधिक बढ़ गया।

विमुन्द्रीकरण का उद्योग एवं रोजगार पर प्रभाव :–

विमुन्द्रीकरण के दौरान रोजगार एवं उद्योग भी प्रभावित हुआ ! जून 2015 के बाद कम्पनियों के आर्डर कम हुए, सर्विस सेक्टर कम्पनियों की ट्रेकिंग करने वाली निक्केई इंण्डिया के अनुसार '' किसी भी क्षेत्र का पी0एम0आई0 46.7 **प्रतिशत** के स्तर पर रहा इसके एक माह पहले 54.5 **प्रतिशत** था, **जि**सके साथ ट्रेडर्स पर भी इसकी मार दिखाई दे रही है। जिसके कारण एक साल के दौरान व्यापार में 40 **प्रतिशत** का नुकसान हुआ हैं, इसके साथ ही **देश** में करीब 15 लाख लोगो को नौकरी गवानी पड़ी ! साथ ही **साथ** लघुउद्योग **भी** पैसे के आभाव से अपना कच्चा माल न प्राप्त कर पाने के कारण उनके अद्यो**गो** पर अत्यधिक

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:2(3), February:2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

नुकसान का सामना करना पड़ा ! क्योकि सरकार ने एक हफ्ते में केवल 2500 रूपये ही नकलने की अनुमति दी थी, इस प्रकार सबसे अधिक असर असंगठित क्षेत्र में भी पड़ा है।

विमुन्द्ररीकरण का जन–धन खातें पर प्रभाव :–

जन–धन योजना की शुरूआत मान्यीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 15 अगस्त 2014 को अपने स्वतंत्रता दिवस के भाषाण में वित्तीय समवेशन की व्यापक कार्यक्रम की घोषणा की थी ! जिसमें बड़ी संख्या में एसे लोगों को लक्षित किया गया था, जो वर्तमान में प्राथमिक वित्तीय सेवाओं से भी वंचित है। प्रधान मंत्री जन–धन योजना में एसे प्रत्येक परिवार को मूल–भूत बैंक खाता उपलब्ध कराने की शुरूआत की गई, जिनके पास अब–तक कोई **खाता नही है योजना के प्रारंभ के समय पहले ही दिन लगभग** 1.50 करोड खाते तथा 23 से 29 अगस्त 2014 के मध्य 18,96,130 खाते इस योजना के तहत खोले गये ! तब से इन खातों में जमा राशि 22 करोड **हुई जिसमें 7.72 करोड़ महिला खाते में 9.07** गांव के 13.58 करोड़ रूपये कार्ड जिसमें 99.98 **प्रतिशत** परिवार शाामिल है। नोट बंदी के 15 दिन के अन्दर कुल 16 लाख खाते जन–धन के खोले गये ! **जबकि** 9 नवम्बर को जन–धन खातों की संख्या 25.51 करोड थी, जो 23 नवम्बर को बढ़कर 25.67 करोड पहुच गई ! इन खातों में 72834.72 करोड रूपये कुल जमा है। इस दौरान जीरो राशि जमा वालें खातों की संख्या में मात्र 1 **प्रतिशत** की गिरावट दर्ज की गई ! **जबकि** 9 नवम्बर को अत्तराखण्ड में जन–धन खातों में जीरो बैलेंस खातों की संख्या में 15 **प्रतिशत** की गिरावट आई, वही जम्मूकाश्मीर में 12 **प्रतिशत** की गिरावट **व महाराष्ट्र** और असम में इन खातों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। अतः नोट बन्दी के बाद जन–धन खातों में 6425215 करोड़ रूपये जमा हुए, उत्तर प्रदेश में 3. 79 करोड़ खाते में 10,67.62 करोड, **पश्चिम** बंगाल **में** 2.44 करोड खातों में 7826.44 करोड, रूपये जमा हुए। नोट बंन्दी के 100 दिनों में 2.26 करोड नए जन–धन खाते खुले ! **इन** तीन महीनों में 19084 रूपये जन–धन खातों में जमा हुए ! **भारत सरकार** वित्त मंत्रालय ने अगस्त में कहा कि नोट बंन्दी के कारण जनधन योजना में खोले गये जीरो बैलेंस खाता कम हुए है। सितम्बर 2016 में 24.1 **प्रतिशत** खाते जीरो बैलेंस **के थे** ! **जबकि** अगस्त 2017 में 21.41 **प्रतिशत** रह गये ! अतः **स्पष्ट** है कि नोट बंन्दी से जन–धन खातों पर भी प्रभाव पड़ा है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:2(3), February:2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

विमुन्द्रीकरण का अर्थ व्यवस्था पर प्रभाव :–

नोट बन्दी के कारण **अर्थव्यवस्था** पर अत्यधिक असर देखने को मिला है, इसी **कारण** बड़े **शहरो** के लोगों ने पी0एम0 मोदी द्वारा डिजिटल भुगतान का रास्ता अपना लिया ! लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में जहां आज भी आम जन को स्मार्ट फोन से **टेक्स्ट** मैसेज तक भेजना नही आता ! वहां डिजिटल भुगतान के माध्यम से निजी या व्यापारिक लेन–देन का सपना दिखाना व्यर्थ ही है। क्योकि ये बाते उनके समझ से बाहर हैं, जिसका मुख्य कारण 125 करोड़ आबादी में से 50 **प्रतिशत** से अधिक लोग गावों में निवास करते है।

28 फरवरी 2017 को केन्द्रीय सांख्यकीय कार्यालय की ओर से वित्त **वर्ष** 2016–17 की तीसरी तिमाही के ऑकड़े में भारत की आर्थिक विकास दर 7.1 **प्रतिशत** के स्तर पर गया सीएसओं द्वारा जारी आकड़े बताते है, कि अर्थव्यवस्था **में** थोड़ा असर देखने को मिला 2016–17 में जी0डी0पी0 वृद्धि दर 7.1% रहने का अनुमान लगाया गया ! जबकी **वर्ष** 2015–16 में जी0डी0पी0 वृद्धि दर 7.9 प्रतिशत **अनुमानित रही ! अतः जी0डी0पी0 वृद्धि दर में 0.8 प्रतिशत की कमी आयी ! इन** लगातार पाँच तिमाही से आर्थिक वृद्धि दर गिर रही है, चालू वित्त **वर्ष** के लिए भारतीय रिर्जव बैक ने पहले 7.3 **प्रतिशत का अनुमान लगाया था ! लेकिन जो बाद में घटकर 6.7 प्रतिशत ही रही !** अतः इसका प्रभाव नोटबंदी के कारण ही रहा है।

निष्कर्ष :–

विमुद्रीकरण के कारण **देश** की सर्म्पूण अर्थव्यवस्था के साथ–साथ आम जन जीवन तक प्रभावित रहा ! लोगों के सामने केवल एक ही काम था, जल्दी सुबह **उठकर** बैंकों की लाइन में लग कर अपने पैसे बदलवाना वही किसान भी अपने खेतों की बुआई के लिए पैसा एवं खाद बीज की व्यवस्था करना ! वही लघु उद्योग भी नोट बन्दी से प्रभावित **हुए**, जिसके कारण समय–समय पर पैसा न मिल पाने के कारण उनका व्यापार अधिक समय तक नही चल सका ! **जिससे व्यक्ति वेरोजगार हो गया एवं अ□नी नौकरी या** अन्य अजीविका के साधनों से उसे निराश होना पड़ा ! जिस**के कारण उसकी** आर्थिक स्थित बदत्तर हो गई ! **जबकि** सरकार ने वित्तीय समावे**शन** के अर्न्तगत खाते खोले गये, जिससे लोगों का विकास

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:2(3), February:2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

हो सके ! इसके लिए सरकार नाटबंन्दी के 15 दिन के अन्दर 16 लाख खातों में 72834.72 करोड़ रूपये जमा किये ! जिसके परिणाम स्वरूप अर्थव्यवस्था में अत्यधिक असर देखने को मिला, जिससे अर्थ्यावयवस्था कुछ महीनों के लिए निचले स्तर पर आ गई, एवं देश में 94 प्रतिशत लोग गैर संगठित क्षेत्र में है, जिससे काफी कठिनाइयों का सामना करना पडा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. शोध पत्र सिंह मिथिलेष कुमार नई दिल्ली
2. शोध–पत्र पाण्डेय मयंक विमुन्द्रीकरण से भारत की अर्थव्यवस्था पर असर
3. अमर उजाला समाचार–पत्र 9 नवम्बर
4. दैनिक भास्कर समाचार पत्र 8 नवम्बर 2017
5. कुरूक्षेत्र फरवरी 2016 सिन्हा शिसिर
6. www.goole..com.